[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3413

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

# शिक्षण एवं प्रदर्शन में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों की भूमिका

**सौम्या सिंह**
शोधार्थिनी वाद्य विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

वैदिक अवधारणा के आधार पर नाद का निर्माण सर्वप्रथम ईश्वर की अभिव्यक्ति है। आदिम काल से ही ओऽमकार को ब्रह्मनाद माना गया। आज का संगीत मनुष्य के प्रयत्नों से अपने वर्तमान रूप में परिणित हुआ है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और यही परिवर्तन हमारे शास्त्रीय संगीत में भी दिखता है जिसने कहीं सकारात्मक तो कहीं नकारात्मक छाप छोड़ी है। इसी क्रम में संगीत शिक्षण एवं प्रदर्शन में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों की भूमिका बहुत अहम रही हैं।

स्वतन्त्रता के बाद अब राष्ट्रीय संरक्षण पाकर भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रदीप्त हो गया, भारतीय संगीत ने एक नवीन करवट ली, जिसके फलस्वरूप रियासती राजाओं के संरक्षण में पनप रहा संगीत अब राष्ट्रीय संरक्षण में आ गया। जहाँ आज शास्त्रीय संगीत विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर एक अहम विषय के रूप में पढ़ाया एवं सिखाया जा रहा है वही शास्त्रीय संगीत का प्रचार–प्रसार मंच प्रस्तुतियों के माध्यम से हो रहा है।

शिक्षण संस्थानों में संगीत का शिक्षण करने के लिए आज कई प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का प्रयोग किया जाने लगा है चाहे वो संगीत की कोई भी विधा गायन, वादन या नृत्य।

20वीं सदी में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का आविष्कार हुआ और ये वाद्य भी वैक्यूम ट्यूब और ट्रांजिस्टर जैसे आविष्कारों का परिष्कृत रूप है, और इन उपलब्धियों ने इन कुछ वर्षों में संगीत के क्षेत्र में व्यापक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है।

आजकल की–बोर्ड, ऑर्गन, पियानो, इलेक्ट्रॉनिक सिन्धेसाइजर जैसे कई इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का प्रयोग संगीत में होने लगा है। किन्तु भारतीय शास्त्रीय संगीत में इन सभी इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का उतना महत्वपूर्ण स्थान नहीं है, किन्तु शास्त्रीय संगीत के शिक्षा–शिक्षण एवं मंच प्रदर्शनों में कई इलेक्ट्रानिक वाद्यों का प्रयोग किया जाने लगा है जिसके फलस्वरूप पिछले एक दशक में कई बदलाव आये हैं जो सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही है।

सर्वप्रथम इन वाद्यों की बात करें तो 1860 के दशक में श्रुति उत्पन्न करने वाली स्वचालित इलैक्ट्रिकल सुरपेटी और दूसरे वाद्य विकसित करने के प्रयास किये गये, संगीत विद्यालय, चेन्नई द्वारा डिजाईन और परिष्कृत किया गया, स्वचालित इलेक्ट्रॉनिक तम्बूरा भी एक ऐसा ही प्रयास था।

1960 के दशक में भारत में वैक्यूम–ट्यूब पर आधारित सुरपेटियाँ बनाने की दिशा में अनेक प्रयास किए गये लेकिन ये आकार में बड़ी होने व भारी होने के कारण उतनी सफल नहीं रही। 1975 के आज पूना के एक भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर एच0वी0 मोडक ने एक स्वचालित संगीत वाद्य विकसित किया, यह एक प्रकार का तन्त्री वाद्य था जो किसी भी प्रकार के संगीत के साथ स्वचालित हो संगत कर सकता था। इसी क्रम में 1970 में इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर व आकाशवाणी 'ए ग्रेड' के वंश वादक जी0 राजनारायण जी ने उस समय व्यवसायिक प्रयोग के लिए उपलब्ध एकमात्र इलेक्ट्रॉनिक ट्रान्जिस्ट्राइज्ड सर्किटों पर काम करना प्रारम्भ किया, करीब एक साल की मेहनत के बाद उन्होंने एक ऐसा सर्किट तैयार किया जो सा–प–सां के तीन समानान्तर स्वर उत्पन्न कर सकता था। इसी प्रकार–

- 1979 में इलेक्ट्रॉनिक तम्बूरा 'सारंग' तालोमीटर (कर्नाटक संगीत के 35 तालों के हिसाब को व्यवस्थित कर सकता है।)
- नादमाला या इलेक्ट्रॉनिक लहरा प्लेयर
- तालमाला या इलेक्ट्रॉनिक तबला
- ध्रुवा (इलेक्ट्रॉनिक सुरपेटी)
- सारंग माइक्रो (इस वाद्य को एक सप्तक की रेंज तक किसी भी सुर पर स्थिर किया जा सकता है।)

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

- उन्नत सुरपेटी और तानपूरा (इसमें एक अन्तर्निर्मित डिजिटल पिच पाइप है और प्रयोक्ता की आवश्यकता अनुसार 'स्वर' को स्टोर करने के लिए 'मेमोरी' की व्यवस्था है।)
- डिजिटल तानपूरा
- स्वचालित संगीत यंत्र (यह यन्त्र गायन वादन के साथ संगति कर सकता है, इसके तार गायक या वादक के स्वरों से स्वयं झंकृत होते हैं।)
- रागिनी
- तानपूरा ड्राएड (ये एक सॉफ्टवेयर है।)

इत्यादि उपकरणों का प्रयोग आज संगीत शिक्षा–शिक्षण एवं मंच प्रस्तुतियों में होने लगा है।

भारतीय इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों से यहाँ के वाद्यों के अस्तित्व को जहाँ एक तरफ चुनौती मिल रही हैं– जैसे मंचों पर तानपूरा का प्रयोग बहुत कम दिखाई पड़ रहा है यहाँ तक कि शिक्षा–शिक्षण में कक्षाओं में तानपूरा बजाकर गाना–बजाना कम हो गया हैं, जिससे की कई बार ये भी देखने को मिलता है कि एक संगीत के विद्यार्थी को तानपूरा बजाना ही नहीं आता, या वो बहुत देर तक तानपूरा लेकर बैठ नहीं पाता क्योंकि उसे उसका अभ्यास ही नहीं है, वही ताल वाद्यों में यदि थोड़ा भराव कर वादन किया जाये तो वो समझ नहीं आता क्योंकि उसका भी अभ्यास नहीं हो रहा है।

साथ ही इन नये प्रयोगों से तानपुरे वाद्य के बनने वाले 'लघु उद्योग' जो मिरज में चल रहे हैं, उन पर सीधा असर आया है साथ ही संगीत के कार्यक्रमों में भी तम्बूरे/ तानपूरे को देखना अब लगभग दुर्लभ होता जा रहा है। विद्यार्थियों में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों की बढ़ती लोकप्रियता के चलते तम्बूरा/ तानपूरा बजाकर रियाज करना पिछली सदियों की बात हो चली है।

हर तथ्य के दो पहलू होते हैं, और इस तथ्य का दूसरा पहलू ये है कि संगीत के शिक्षण एवं प्रदर्शन में इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों की भूमिका सकारात्मक भी है। ये वाद्य स्वतन्त्र रूप से बजाये जाने वाले न होकर हमारे संगीतज्ञों के लिये अभ्यास के साधन अधिक साबित हुये हैं। इलेक्ट्रॉनिक वाद्य जहाँ संगीत के लिए सुविधा वह सहजता प्रदान करते हैं, वहीं सुरीलापन व लयात्मकता बढ़ाने का साधन हो सकते हैं। इसमें महत्वपूर्ण में है कि एक शिक्षार्थी, शिक्षक और कलाकार को ये पता होना चाहिए कि उन्हें किस चीज का प्रयोग कितना करना है जिसने हमारी सांगीतिक विरासत का भी ह्रास ना हो, वो और भी निखरे और तकनीक का सहारा लेकर वो और नई ऊँचाइयों तक पहुँचे।